भाकृअनूप - राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि सलाहकार सेवा

कोई भी कृषि कार्य करने से पहले स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार कोविड -19 दिशानिर्देशों का पालन करें

सितंबर 2021 के प्रथम पखवाड़े की रणनीतियाँ

शुष्क सीधी बुआई धान

- *एक ही खेत से अलग किए गए अधिक दिनों वाली पौधों या क्लोन पौधों को 33 पौधे प्रति पूंजा प्रति वर्गमीटर की दर पर खाली स्थान को भरें।*
- *हाथों से निराई के विकल्प के रूप में रोपाई करने के 3-7 दिनों बाद शाकनाशी बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल + प्रीटिलाक्लोर (लोंडेक्स पावर / इरेज़ स्ट्रॉन्ग) 4 किग्रा / एकड़ दर पर में 4 किग्रा सूखी रेत मिलाकर प्रयोग करें या रोपाई करने के 3-5 दिनों बाद पाइराज़ोसल्फ्यूरॉन-इथाइल 80 ग्राम/एकड़ छिड़काव करें या रोपाई करने के 10-12 दिनों बाद (खरपतवार की 2-3 पत्ती अवस्था) पर बिस्पायरीबैक सोडियम 10 एससी (नोमिनी गोल्ड) 120 मि.ली./एकड़ दर पर छिड़काव करें या रोपाई के 15-20 दिन बाद पेनॉक्सुलम + साइहालोफॉप ब्यूटाइल (विवाया) 900 मिली/एकड़ दर पर या रोपाई के 15-20 दिन बाद फेनोक्साप्रोप-पी-एथिल+ एथोक्सिसल्फ्यूरॉन (राइस स्टार + सनराइज) 240+50 ग्राम/एकड़ दर पर 16 लीटर क्षमता का 8 टैंकों में छिड़काव करें।*
- *उथली निचलीभूमि/मध्यम भूमि में अधिक उपज देने वाली किस्मों के लिए रोपे गए धान में 35 किलो यूरिया/एकड़ और संकर किस्मों के लिए 42 किलो यूरिया/एकड़ जुताई की अवस्था में प्रयोग करें।*
- *जस्ता की कमी वाले क्षेत्रों में, यदि अंतिम भूमि की तैयारी के दौरान जिंक सल्फेट प्रयोग नहीं किया गया है, तो धान की रोपाई के 30 और 45 दिनों के बाद जस्ता-EDTA 0.5 ग्राम / 1 लीटर दर पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या, खेत में जस्ता की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 15 दिनों के अंतराल पर 0.5% जिंक सल्फेट घोल (एक एकड़ में 400 लीटर पानी में 2 किग्रा जिंक सल्फेट+10 किग्रा चूना) तीन बार छिड़काव करें।*
- *तना छेदक आक्रांत वाले क्षेत्रों में, अंडा परजीवी ट्राइकोग्रामा जैपोनिकम 50000 अंडे/एकड़ (३ कार्ड/एकड़) साप्ताहिक अंतराल पर तब तक छोड़ें जब तक कि कीटों की संख्या अधिक न दिखाई दे।*
- *तना छेदक और पत्ती फोल्डर के वयस्क कीटों को आकर्षित करने और मारने के लिए 1 प्रकाश जाल/एकड़ की दर से लगाएं।*
- *धान की नर्सरी में तना छेदक और पत्ता मोड़क के संक्रमण की निगरानी के लिए 3 फेरोमोन ट्रैप/एकड़ रखें। जब भी नर कीट/जाल की संख्या 4 या 5 तक पहुँच जाए, तो अजाडिरक्टिन 0.15% ईसी 800 मिली/एकड़ दर पर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4% जीआर 4 किग्रा/एकड़ 1:1 के अनुपात में रेत के साथ मिलाकर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी दर पर या कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर या फ्लूबेनडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।*
- *जब भी दो मुड़ी हुई पत्तियां/पूंजा दिखाई दें तो पत्ता मोड़क को नियंत्रित करने के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ दर पर या फ्लूबेंडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ या, करटाप 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ दर से या क्विनालफॉस 25 ईसी 640 मिली/एकड़ 200 लीटर दर से पानी मिलाकर छिड़काव करें।*

- *इल्लियों/केस वर्म/हिस्पा के प्रकोप की स्थिति में क्लोरपाइरीफॉस 20ईसी 400 मिली/एकड़ दर पर या ट्रायजोफोस 40 ईसी 500 मिली/एकड़ दर पर का छिड़काव करें। छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का प्रयोग करें।*
- *गॉल मिज संक्रमण होने पर कार्बोसल्फान 25% ईसी 400 मिली/एकड़ दर पर छिड़काव करें या करटाप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर या कार्बोफुरन 3जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर प्रयोग करें।*
- *यदि भूरा पौध माहू (बीपीएच) की संख्या लागत-लाभ की सीमा (5-10 कीट/पूंजा) से अधिक है, तो वैकल्पिक गीला और सुखाने की तकनीक (पानी लंबे समय तक खेत में खड़ा नहीं होना चाहिए) द्वारा धान के खेत की सूक्ष्म जलवायु को बदलने की सलाह दी जाती है। यदि समस्या फिर भी बनी रहती है, तो ट्राइफ्लुमेज़ोपाइरिम 10% एससी 94 मिली/एकड़ दर पर या पाइमेट्रोज़ीन 50% डब्ल्यूजी 120 ग्राम/एकड़ दर पर या डाइनोटफ्यूरन 20% एसजी 80 ग्राम/एकड़ दर पर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल 50 मिली/एकड़ दर पर या एसेफेट 75% एसपी 400 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें। भूरा पौध माहू के लिए अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग निर्धारित मात्रा में ही करें। भूरा पौध माहू के संक्रमण के दौरान नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग से बचें।*
- *यदि 1-2 दौजी में आच्छद अंगमारी प्रकोप देखा जाता है, प्रोपिकोनाज़ोल 75% 200 मिली/एकड़ दर पर या हेक्साकोनाज़ोल 50% 400 मिली/एकड़ दर पर या वैलिडैमाइसिन 3L 400 मिली/एकड़ दर पर या टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ़्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 80 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें। छिड़काव को 7-10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *जीवाणुज अंगमारी/जीवाणुज पत्ता अंगमारी होने की स्थिति में, स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट (9%) + टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड (1%) 200 ग्राम/ एकड़ दर पर सहित कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 ग्राम / एकड़ दर पर डालें। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *यदि पत्ता प्रध्वंस देखा जाता है, बीमारी को नियंत्रित करने के लिए टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% (नैटिवो 75 डब्ल्यूजी) 80 ग्राम प्रति एकड़ दर पर या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम प्रति एकड़ दर पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। वैकल्पिक रूप से, बेल के पत्तों (25 ग्राम ताजी पत्तियां) का निचोड़ का छिड़काव या तुलसी (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या नीम (200 ग्राम ताजी पत्तियां) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने पर रोग कम करने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, ट्राइकोडर्मा विरिडे जैसे जैवनियंत्रक एजेंट (न्यूनतम 106) सीएफयू) 2 किलो प्रति एकड़ दर पर प्रयोग किया जा सकता है। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *सीधी बुआई वाले चावल में भूरा धब्बा होने की स्थिति में, प्रोपिकोनाज़ोल 25ईसी 200 मिली/एकड़ दर पर या मैनकोज़ेब 75 डब्लयूपी 400 ग्राम/एकड़ दर पर या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लयूपी 400g/एकड़ दर पर या कार्बेंडाजिम 64% + मांकोजेब 8% 75 डब्लयूपी 300 ग्राम/एकड़ दर पर का छिड़काव करें। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *यदि फसल 45 दिन से अधिक पुरानी हो तो सीधी बुवाई वाले धान में बेउषण न करें।*
- *किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धान की खेती के सभी पहलुओं के लिए एनआरआरआई द्वारा विकसित राइसएक्सपर्ट मोबाइल ऐप (गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध) को डाउनलोड करें और उसका उपयोग करें।*

नोट: कम वर्षा और नहर सिंचाई के पानी की अनुपलब्धता के कारण धान के खेत में नमी की कमी पर सलाह

- *यदि खेत में पर्याप्त नमी हो तो उर्वरकों की टॉप ड्रेसिंग या तो रोपित या सीधी बुआई वाले धान में करें, अन्यथा किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धान के खेत में उर्वरकों की टॉप ड्रेसिंग को तब तक के लिए स्थगित कर दें जब तक कि पर्याप्त मिट्टी की नमी या तो वर्षा या सिंचाई के पानी से प्राप्त न हो जाए। कम/मध्यम भूमि में रोपित धान के मामले में जहां यूरिया की टॉप ड्रेसिंग नहीं की गई है, वर्षा के बाद 2% यूरिया का छिड़काव करें।*
- *तटीय ओडिशा में पर्याप्त वर्षा की उपलब्धता के साथ, मध्यम अवधि की किस्मों के लिए 45 दिन पुराने और लंबी अवधि की किस्मों के लिए 60 दिन पुराने पौधों या डापोग विधि द्वारा उगाई गई छोटी अवधि की किस्मों की सामान्य रोपाई 10 सितंबर तक की जा सकती है। लेकिन मध्य और पश्चिमी ओडिशा के लिए यह सलाह दी जाती है कि फूल लगने के दौरान कम तापमान की शुरुआत के संयोग के कारण धान की बुआई या रोपाई न करें।*
- *जब मिट्टी में पर्याप्त नमी न हो तो चावल के खेत में खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए खरपतवार- पूर्व या खरपतवार-पश्चात के शाकनाशी का प्रयोग न करें।*
- *सीधी बुआई वाले धान में नमी की कमी को दूर करने के लिए काओलिन 3% या केसी। 1% या साइकोसेल 1000 पीपीएम (1 मिली वाणिज्यिक उत्पाद/लीटर पानी) का छिड़काव करें।*
- *जहां भी सूखे के कारण धान की खेती नहीं की गई है, वहां किसानों को सलाह दी जाती है कि वे उपलब्ध मिट्टी की नमी का उपयोग करते हुए उच्च/मध्यम भूमि वाले खेत में एमरनथस, रागी, कुल्थी, चना, उड़द, लोबिया, शकरकंद और तिल जैसी छोटी अवधि की रबी पूर्व फसलें उगाएं।*